आसान क्या है ? और कठिन क्या है ?

जिन्दगी में बहुत से कार्य आसान होते हैं, इसलिए मनुष्य इन आसान उपायों को ही प्रयोग करना पसंद करता है। ईश्वर प्राप्ति के लिए और भगवान को खुश करने के लिए बहुत से आसान कार्य होते हैं और मनुष्य इन सरल उपायों को करते रहकर यह झूँठा विश्वास बनाए रखता है, कि अब तो भगवान मुझसे खुश हो ही जावेंगे। बचपन से ही इनके संस्कार डाल दिए जाते हैं, जो मन में गहराई तक उतर जाते हैं और फिर इनके अलावा भी कोई करन योग्य कार्य हैं, यह समझना बहुत कठिन होता है। भगवान को खुश करने के जो आसान तरीके हमें बचपन से सिखाए गये हैं उनमें से कुछ ये हैं :-

1. अगरबत्ती लगाना, दीपक या मोमबत्ती जलाना
2. फूल-माला चढ़ाना, चादर चढ़ाना
3. नारियल, मिठाइ, प्रसाद आदि चढ़ाना
4. धूप, दीप और कपूर से आरती करना
5. घंटे, घड़ियाल, शंख, झांझ-मजीरे, नगारे बजाना
6. भगवान के आगे नृत्य करना और कीर्तन करना
7. भगवान की मूर्ति को नये-नये कपड़ों और जेवरों से सजाना
8. भगवान को प्रसाद चढ़ाकर उनके भक्तों में बाँटना
9. सवा-मणी करके अपने मित्रों, रिश्तेदारों को भोजन कराना
10. पीपल के वृक्ष, तुलसी के पौधे को जल से सींचना,
11. तिलक-छापे लगाना, रामनाम छपे दुपट्टे, शाल ओढ़ना
12. भगवान का जन्म दिन-जन्माष्टमी, रामनवमी मनाना
13. भगवान की शोभा-यात्रा, कलश यात्रा निकालना
14. भागवत और रामायण की कथा, माता का जगराता कराना

15. अपने ईष्ट देव की माला फेरना, नाम–जप करना
16. हवन–यज्ञ करना, आहूति देना, भोग लगाना
17. शिवजी के लिंग पर जल, दूध, तिल, चन्दन चढ़ाना
18. गणेशजी, हनुमान जी और भैरोंजी को सिन्दूर चढ़ाना
19. भैरोंजी, देवी–देवताओं को देशी शराब की बोतल चढ़ाना
20. काली माई को बकरे की बलि चढ़ाना
21. शनि देव को प्रसन्न करने के लिए काले तिल और तेल चढ़ाना
22. भगवान के नाम पर व्रत–उपवास करके भूखे रहना
23. अपने चेहरे पर दाढ़ी–मूँछ और सिर के बाल बढ़ा लेना
24. अपने चेहरे से दाढ़ी–मूँछ और सिर के बाल सफाचट करा लेना
25. तीर्थ–स्थानों में, पवित्र नदी–सरोवर मं नहाकर, भगवान के दर्शन करना
26. अपने गाँव–शहर के मंदिरों में जाकर भगवान के दर्शन करना
27. संत–महात्माओं को दान देना, भण्डारा करना, भिखारियों को भीख देना
29. लंगर खोलना– गरीबों को और भिखारियों को भोजन कराना
30. कुत्तों को रोटी, बन्दरों को चने, केले खिलाना, गाय को चारा डालना
28. श्राद्ध करना, कौवे, कुत्ते और गाय को भोजन देना
31. अपने गाँव, शहर में भगवान का मन्दिर बनवाना
32 चारों धाम की तीर्थ यात्रा करना।

यदि हमें घर पर रहकर, इन सब आसान उपायों को करने से ही भगवान की प्राप्ति हो जाती, तो फिर हमारे ऋषि–मुनि पहाड़ों पर जाकर क्यों तपस्या करते और सूख कर जर्जर शरीर हो जाते? सिद्धार्थ गौतम और वर्धमान महावीर को अपना राज–पाट छोड़ कर क्यों जंगलों में भटकना पड़ता और भगवान की खोज में इतना परेशान होना पड़ता? क्या उनको ये सब उपाय मालूम नहीं थे? क्या उस जमाने में

पंडित, पुजारी नहीं थे, जो उनको ये सब उपाय बताते? फिर उनको राजपाट छोड़कर सत्य की खोज में जंगलों मं कई वर्षों तक क्यों भटकना पड़ा था?

हिन्दुओं में सबसे पवित्र ग्रंथ –भगवद्गीता को माना जाता है, जिसमें हम सफल जीवन कैसे जिएं, इसका पूरा मार्गदर्शन दिया गया है। भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मुखारविन्द से अर्जुन को सच्चा ज्ञान दिया था, जिससे कि उसका मोह दूर हो गया था और वह अपने जीवन–संग्राम में उतर गया था। तत्पश्चात ही महाभारत का युद्ध शुरू हुआ था। क्या आपने कभी ध्यान से गीता पढ़ी है? क्या गीता के किसी भी अध्याय में या किसी भी श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण ने यह कहा है कि उपर्युक्त 32 उपायों को आजमाने से या इनमें से किसी एक भी उपाय को काम में लेने से भगवान की प्राप्ति हो जाएगी। क्या इन 32 उपायों में से एक भी उपाय का वर्णन गीता में कहीं पर भी किया गया है? सच्चाई तो यह है कि इन उपायों को करने से भगवान की प्राप्ति कभी नहीं होती है, केवल अपने मन को भुलावा दिया जाता है कि शायद इन सरल–सरल उपायों का प्रयोग करने से भगवान प्रसन्न हो जाएगा। यदि कोई व्यक्ति नदी के एक किनारे पर बैठ कर यह प्रार्थना करे कि —ए नदी के दूसरे किनारे, तू मेरे पास आजा, मैं तेरा दर्शन करना चाहता हूँ। इसके लिए बहुत कातर स्वरों से प्रार्थना करे, रोए–गिड़गिड़ाएं, भजन गाए, कीर्तन करे, उसकी दया की महिमा गाए, तब क्या होगा? क्या वह दूसरा किनारा हमारे पास आ जाएगा? नहीं, कभी नहीं आएगा। इसके लिए तो हमें तैरकर एक किनारे से दूसरे किनारे तक जाना होगा। इसके लिए तो हमें तैरना सीखना होगा। संसार सागर को तो तैरकर ही पार किया जा सकता है। इसीलिये, भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के बारहवें अध्याय के आठ श्लोकां में श्लोक संख्या 13 से 20 में उन गुणों को वर्णन किया है कि मेरे भक्तों में ये 35 गुण होंगे तो मैं उनभर बहुत प्रसन्न होऊंगा।

पाठकों की सुविधा के लिए उनको यहाँ पर उद्धत किया जा रहा है:–

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्र करूण एव च ।
निर्ममो निरहङ्कार समःदुःखसुखः क्षमी।। 13।।

सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चय।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तःस मे प्रियः ।। 14।।

जो व्यक्ति सब प्राणियों में द्वेष की भावना से रहित होकर, मित्रता और करूणा की भावना रखता है, जो मोह ममता स रहित होकर और अहंकार से रहित रहकर, सुख और दुःख में समान भाव से रहने की क्षमता रखता है, जो सन्तुष्ट रहता है, परन्तु योगी की तरह से लगातार परिश्रम करता है, जो दृढ़ निश्चय के साथ मुझमें मन और बुद्धि को स्थिर करके मेरी भक्ति में लगा रहता है, ऐसा भक्त मुझे अत्यन्त प्रिय है।

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ।। 15।।

संसार में जिससे किसी को भी कष्ट नहीं पहुँचता है और जो संसार के किसी अन्य प्राणी के द्वारा विचलित नहीं किया जा सकता है, जो सुख-दुःख में, भय तथा चिन्ता-उद्वेग में समभाव रखता है, ऐसा भक्त मुझे अत्यन्त प्रिय है।

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्त स मे प्रियः।। 16।।

जो किसी से कोई अपेक्षा अर्थात् आशा नहीं रखता है, जो मन से, बुद्धि से, चित्त से शुद्ध है और अपना कार्य करने में दक्ष है। जो सांसारिक चिन्ताओं के प्रति उदासीन है और अपनी व्यथा को छोड़ चुका है, जिसने राग-द्वेष का आरंभ करना छोड़ दिया है, ऐसा भक्त मुझे अत्यन्त प्रिय है।

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।

शुभाशु भ परित्यागी भक्तिमान्य स मे प्रियः।। 17।।

जो ना तो हर्ष याने खुशी के अवसर आने पर खुशी से पागल हो जाता है, ना ही किसी चीज का शोक करता है, ना पछतावा करता है और ना ही किसी चीज की इच्छा करता है। शुभ एवं अशुभ सभी बातों का परित्याग करने वाला भक्त ही मुझे प्रिय लगता है।

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ।। 18।।

जो अपने शत्रुओं और मित्रों में समभाव रखता है, और इसी तरह से अपने होने वाले सम्मान और अपमान में भी समभाव रखता है। शीत याने जाड़ा और उष्ण याने गर्मी को समान भाव से भोगता है। सुख तथा दुःख में समान भाव रखता है। ऐसा भक्त मुझे अत्यन्त प्रिय है।

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मोनी सन्तुष्टो येन केनचित।
अनिकेत स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ।। 19।।

यदि मेरे भक्त की कोई निन्दा हो, अपयश हो अथवा यश हो, प्रशंसा हो, दोनों में ही समान भाव रखे और मौन रहे। कोई भी अच्छी या बुरी प्रतिक्रिया नहीं करे और सदा सन्तुष्ट रहे। जो किसो भी प्रकार से अपने बारे में चिन्ता नहीं करता है। जिसकी मति याने मन स्थिर है अर्थात जो स्थिर-चित्त से मेरी भक्ति में लगा हुआ है, मनुष्यों में ऐसा भक्त मुझे प्रिय है।

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तंपर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ।। 20।।

जो इस धर्म रूपी अमृत को, जिस तरह से जैसा कहा गया है, उस पर चलने को पूर्णतया तत्पर रहते हैं, और पूर्ण श्रद्धा के साथ इन गुणों को धारण करके मेरी भक्ति के अमर पथ का अनुसरण करते हैं, ऐसे भक्त मुझे अत्यन्त प्रिय हैं।

उपर्युक्त इन सभी गुणों को मन में, मस्तिष्क में, स्वभाव से धारण करना बहुत ही कठिन काम है और यदि मनुष्य इन गुणों को धारण कर लेवे, तो वह सभी दु:खों से बाहर निकल आएगा, तब उसे भगवान की जरूरत ही क्या रहेगी? परन्तु इस कठिन काम को कोई क्यों करे, जब आसान से आसान तरीके पंडे-पुजारियों ने बता रखे हैं। भले ही, इन आसान तरीकों को करने से कोई फायदा नहीं हो, परन्तु मन में एक भ्रम तो बना ही रहता है कि शायद इन तरीकों को आजमाने से भगवान उनपर प्रसन्न हो जावे। सच्चाई तो यह है कि मनुष्य कठिनाई से बचने के लिए आसान तरीकों को ही काम में लेना चाहता है। चूँकि इन तरीकों से पंडे-पुजारियों को दान-दक्षिणा खूब मिलती है, इसलिए भगवान की भक्ति के नाम पर, ये लोग तो वहो तरीके बताएंगे, जो इनके फायदे के होगें। भले ही, जनता के साथ धोखा हो रहा है। गरीब लोग गुमराह हो रहे हों। अब आपके हाथ में है कि आप क्या चाहते हैं? भगवान को प्राप्त करना चाहते हैं अथवा अपनी मेहनत की कमाई को इन सरल से उपायों को करने में व्यर्थ खर्च करना चाहते हैं?

अनंत मंगल कामनाओं के साथ,

आपका शुभाकांक्षी,

भाई सत्यनारायण पाटोदिया मोबाइल : 9314877066